Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

कक्षा - 12

भारतीय इतिहास के कुछ विषय

अध्याय - 4

विचारक, विश्वास और इमारतें
सांस्कृतिक विकास (600 ई.पू.-600 ई.)

भाग - 8

प्रीतेश जोशी

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- हालांकि वे प्रारम्भिक भारतीय मूर्तिकला को यूनान की कला से निम्न स्तर का मानते थे।
- बुद्ध और बौधिसत्त की मूर्तियों की खोज से वे काफी उत्साहित हुए। क्योंकि ये मूर्तियां यूनानी परंपराओं से प्रभावित थीं।
- ये मूर्तियां तक्षशिला और पेशावर जैसे उत्तर-पश्चिम के नगरों में मिली थी। इन इलाकों में 200 ई. पू. में भारतीय यूनानी शासकों ने राज्य किया था।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

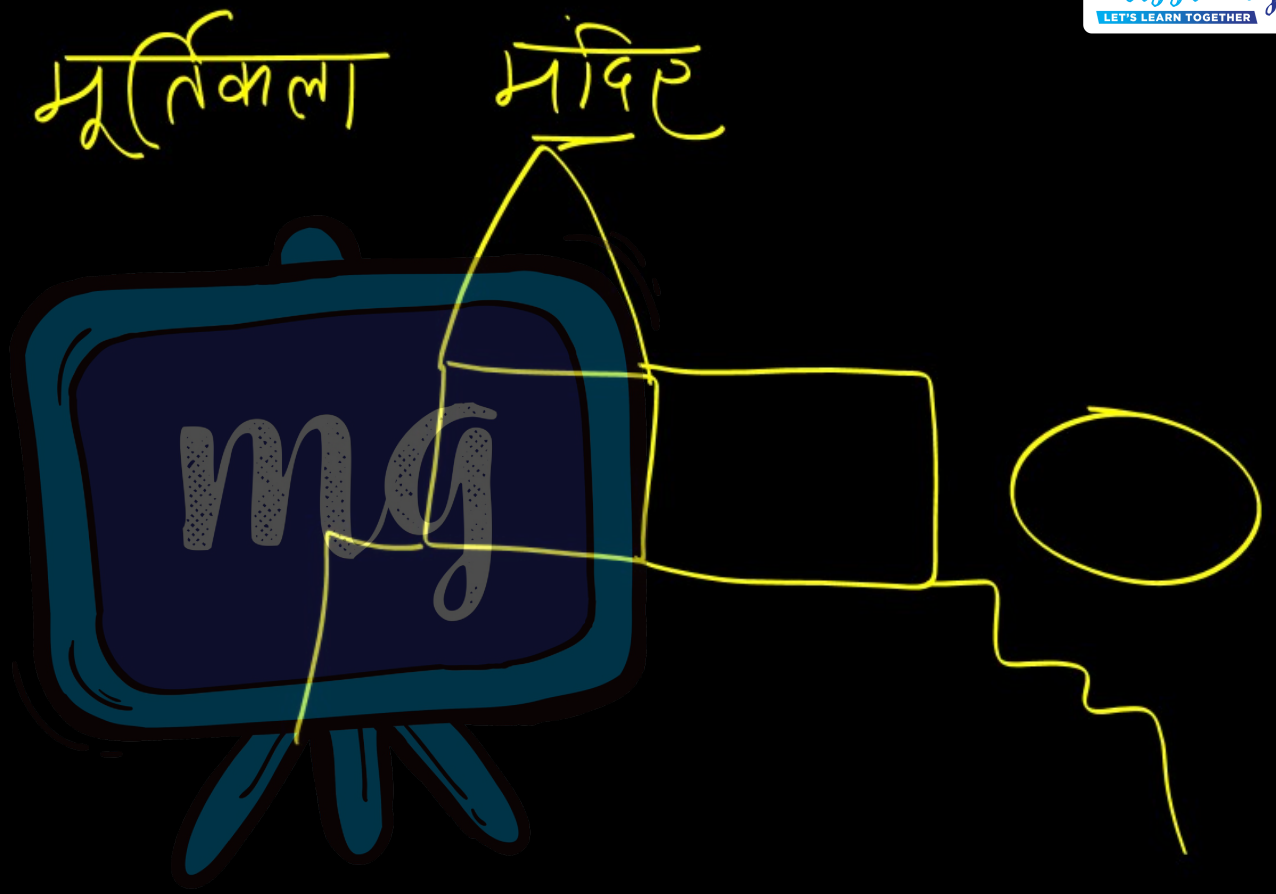

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

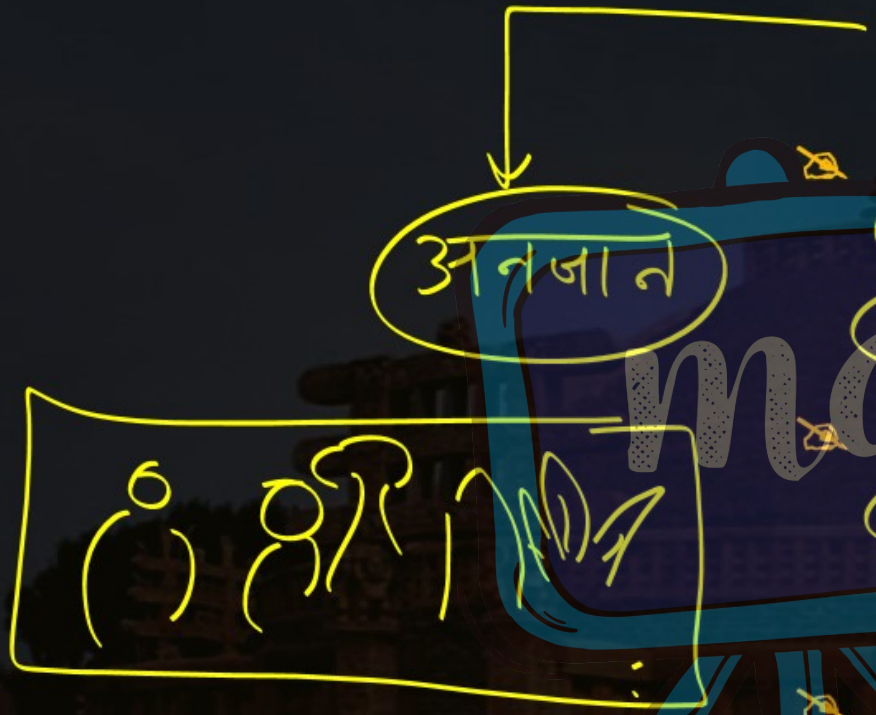

अनजाने को समझने की कोशिश

यूरोप के विद्वानों ने उन्नीसवीं सदी में जब देवी-देवताओं की मूर्तियां देखीं तो वे उनकी पृष्ठभूमि और महत्व को नहीं समझ पाये।

कई सिरों और हाथों वाली या मनुष्य और जानवर के रूपों को मिलाकर बनाई गई मूर्तियां उन्हें विकृत लगती थीं और कई बार वे घृणा से भर जाते थे।

इन शुरू-शुरू के विद्वानों ने ऐसी अजीबोगरीब मूर्तियों की समझ बनाने के लिए उनकी तुलना एक ऐसी परंपरा से की जिससे वे परिचित थे। यह थी प्राचीन यूनान की कला परंपरा।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- ये मूर्तियां यूनानी मूर्तियों से काफी मिलती-जुलती थीं क्योंकि ये (यूरोपीय विद्वान) विद्वान यूनानी परंपरा से परिचित थे। इसलिए उन्होंने इन्हें भारतीय मूर्ति-कला का सर्वश्रेष्ठ नमूना माना।
- इसलिए इन विद्वानों ने इस कला को समझने के लिए एक तरीका अपनाया –

"परिचित चीजों के आधार पर अपरिचित चीजों को समझने का पैमाना तैयार करना।"

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

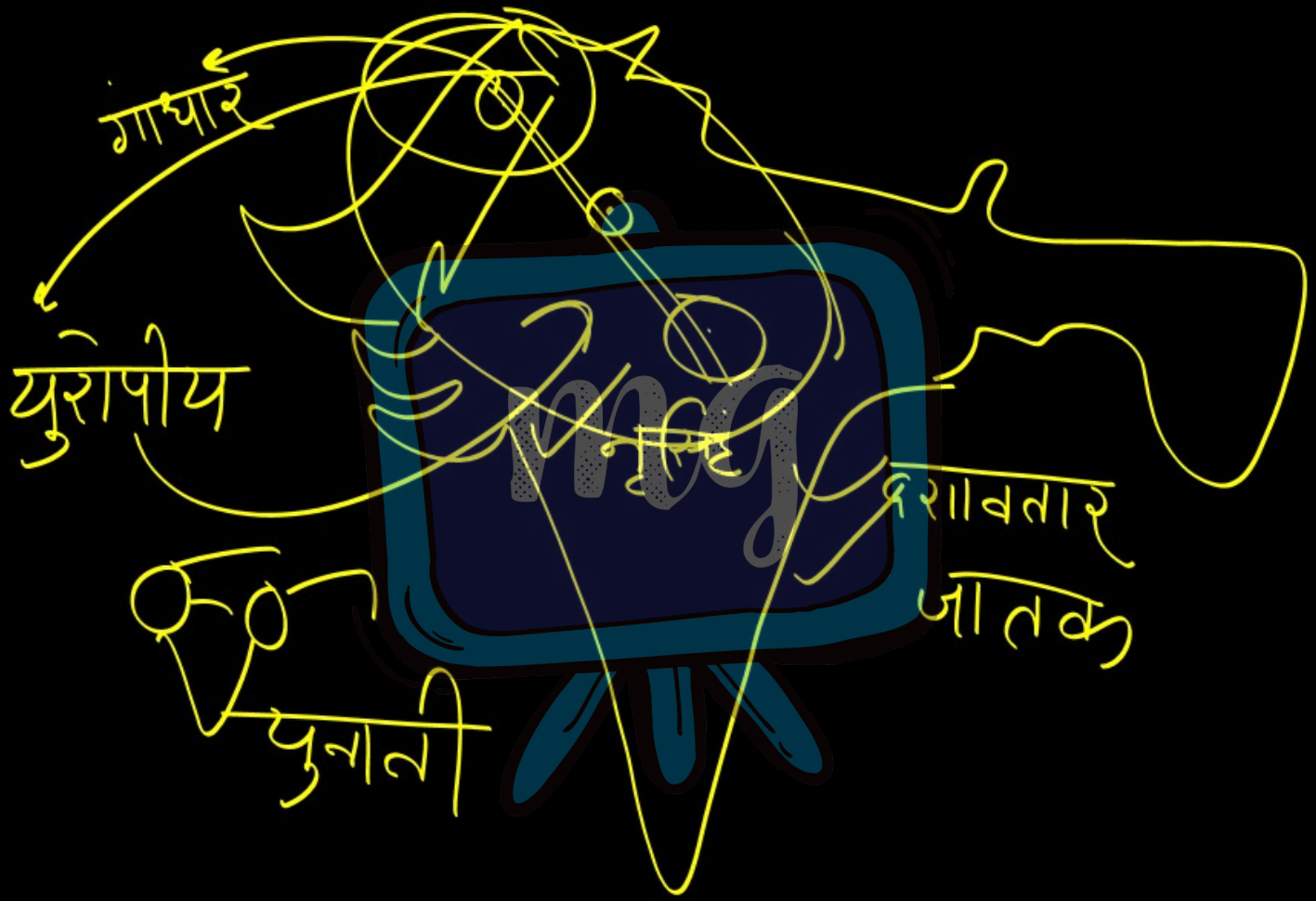

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

गांधार का एक बोधिसत्त
उनके कपड़ों और केश विन्यास यूनानी
परंपरा जैसे हैं।

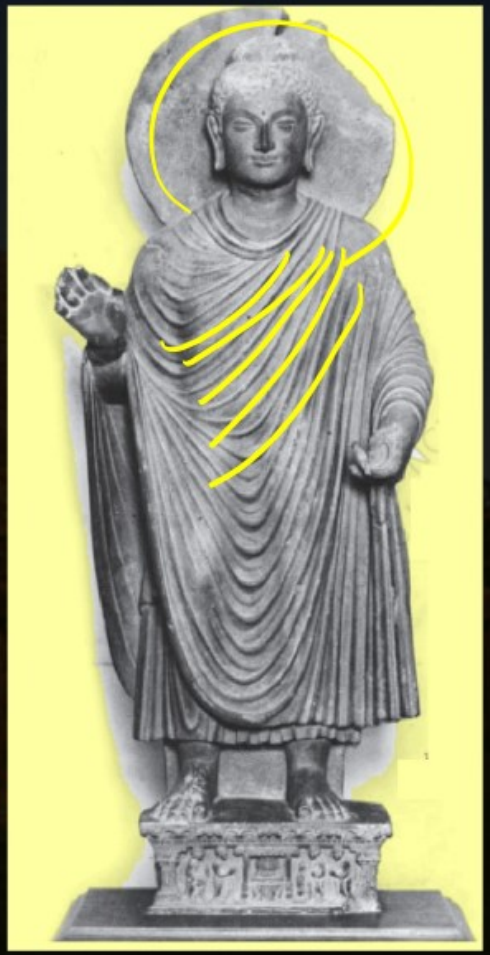

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

यदि लिखित और दृश्य का मेल नहीं :-

- भारतीय मूर्तियों की यूनानी मूर्तियों से तुलना कर निष्कर्ष निकालने की अपेक्षा लिखित ग्रंथों से जानकारी इकट्ठी करना, निश्चय ही ज्यादा बेहतर तरीका है।
- लेकिन यह बहुत आसान नहीं है। इसका सबसे दिलचस्प उदाहरण है :-

महाबलीपुरम (तमिलनाडु) में एक विशाल चट्टान पर उत्कीर्ण मूर्तियां।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

चट्टान

गंगा

अर्जुन

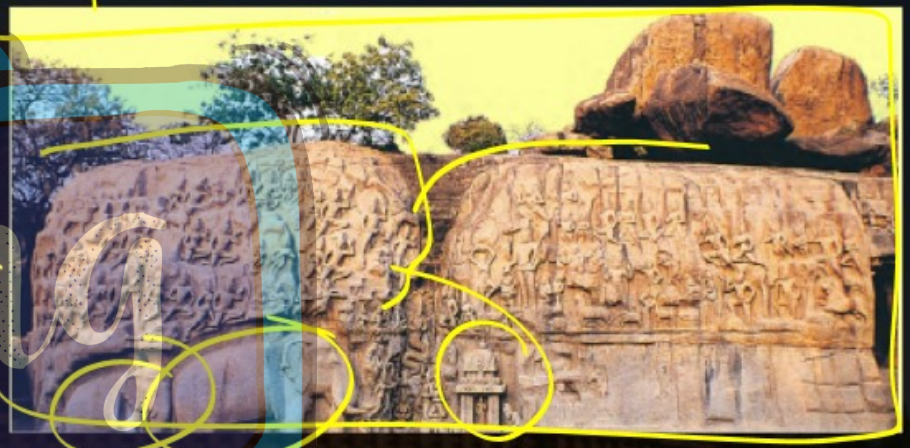

महाबलीपुरम् की एक मूर्ति

इस चित्र में किसी कथा का सजीव चित्रण किया गया लगता है।

लेकिन यह कौनसी कथा है ?

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

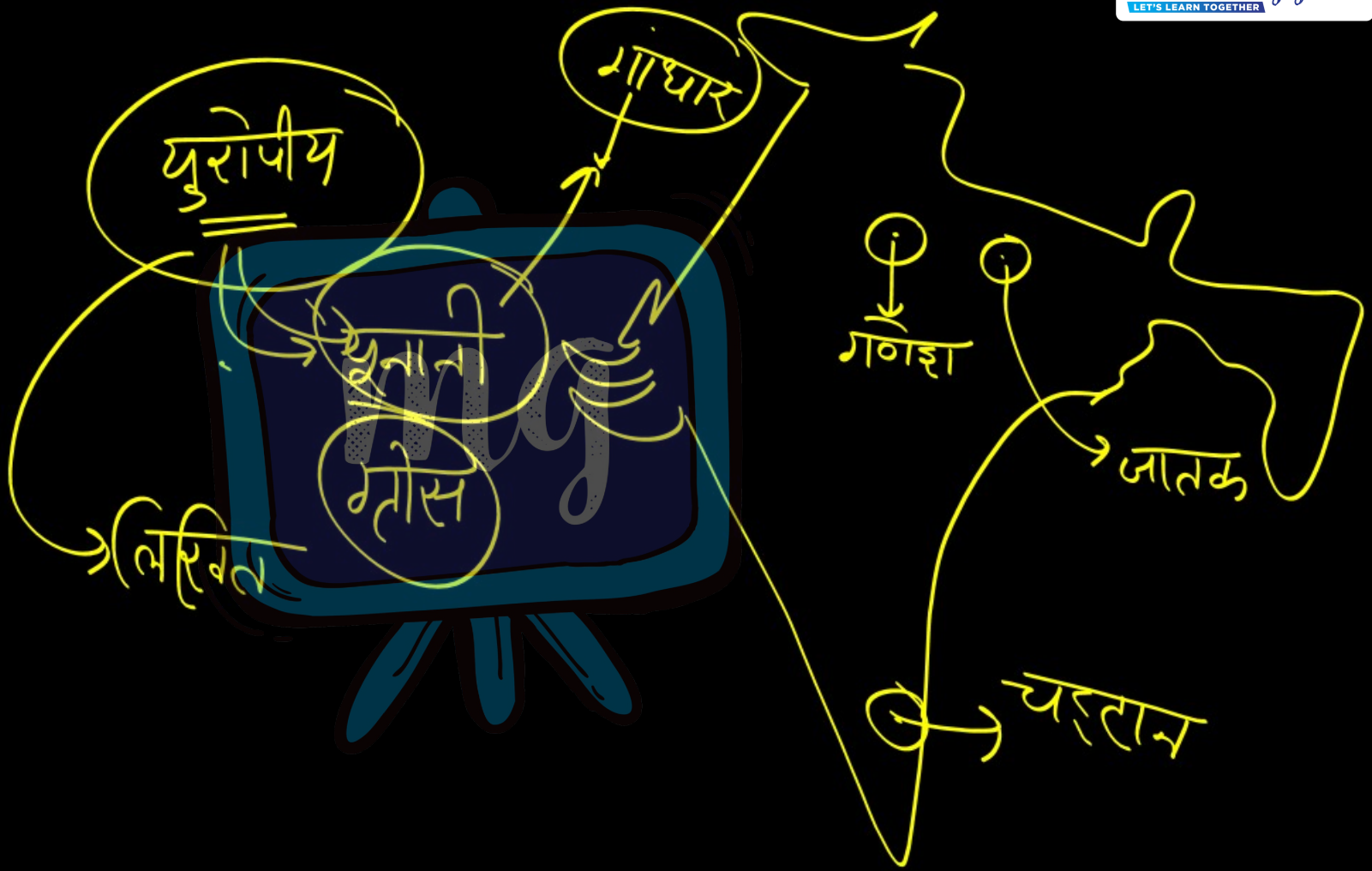

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- कला इतिहासकारों ने पौराणिक साहित्यों में इस कथा को पहचानने के लिए काफी खोजबीन की है। लेकिन उनमें काफी मतभेद हैं।
- कुछ का मानना है कि इसमें गंगा नदी के स्वर्ग से अवतरण का चित्रण है – चट्टान की सतह के मध्य प्राकृतिक दरार शायद नदी को दिखा रही है। यह कथा महाकाव्यों और पुराणों में वर्णित है।
- दूसरे विद्वान मानते हैं कि यहां पर दिव्यास्त्र प्राप्त करने के लिए महाभारत में दी गई अर्जुन की तपस्या को दिखाया गया है। वे मूर्तियों के बीच में एक साधु को केन्द्र में रखे जाने की बात को महत्व देते हैं।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- अंततः हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि – बहुत से रीति रिवाज, धार्मिक विश्वास और व्यवहारों को इमारतों, मूर्तियों या चित्र कला के द्वारा स्थाई दृश्य माध्यमों के रूप में दर्ज नहीं किया गया है।
- इस दिन-प्रतिदिन और विशिष्ट अवसरों के रीति-रिवाज भी शामिल नहीं हैं।
- शायद लोगों को चिर स्थाई विवरण रखने की जरूरत महसूस नहीं हुई हो।
- फिर भी इस अध्याय में शानदार उदाहरणों को चुना गया है। यद्यपि वे एक विशाल ज्ञान राशि की मात्र ऊपरी परत है।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

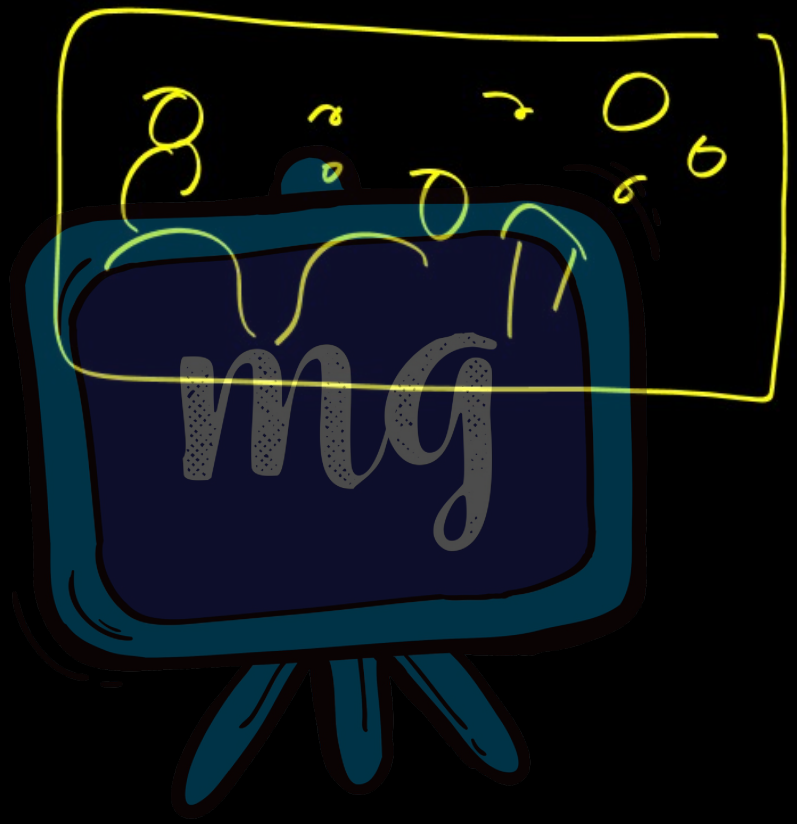

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

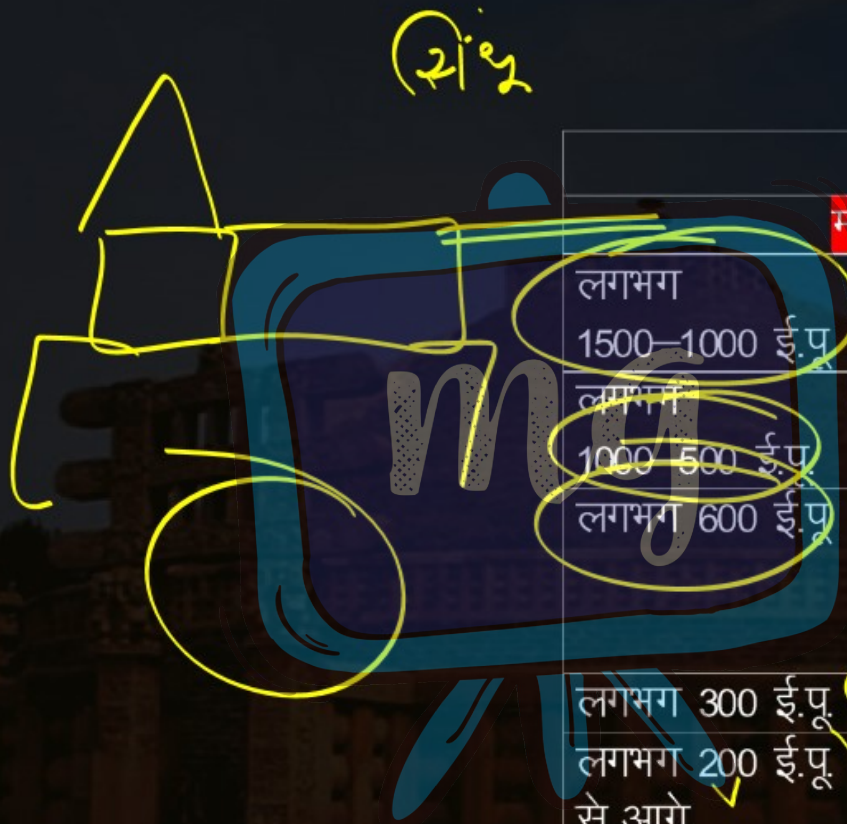

काल रेखा–1	
	महत्वपूर्ण धार्मिक बदलाव
लगभग 1500–1000 ई.पू.	प्रारम्भिक वैदिक परंपराऐं
लगभग 1000–500 ई.पू.	उत्तर वैदिक परंपराऐं
लगभग 600 ई.पू.	(i) प्रारम्भिक उपनिषद (ii) जैन – धर्म (iii) बौद्ध – धर्म
लगभग 300 ई.पू.	आरंभिक स्तूप
लगभग 200 ई.पू. से आगे	(i) महायान बौद्ध मत का विकास (ii) वैष्णववाद (iii) शैववाद और देवी पूजन परंपराऐं
लगभग 300 ई.	सबसे पुराने मंदिर

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

CUET

काल रेखा–2

प्राचीन इमारतों और मूर्तियों की खोज और संरक्षण के मत्वपूर्ण चरण

उन्नीसवीं सदी	
1814	इंडियन म्यूजियम–कलकत्ता की स्थापना
1834	(i) रामराजा की पुस्तक – 'एसेज ऑन द आर्किटेक्चर ऑफ द हिंदुज' का प्रकाशन (ii) कनिंघम ने सारनाथ के स्तूप की छानबीन की।
1835–42	जेम्स फर्गुसन ने महत्वपूर्ण पुरातात्विक स्थलों का सर्वेक्षण किया।
1854	अलेक्जैंडर कनिंघम ने सांची पर सबसे प्रारम्भिक पुस्तकों में से एक 'भिलसा टोप्स' पुस्तक लिखी।
1878	राजेन्द्र लाल मिश्र की पुस्तक : बुद्ध गया : 'द हेरिटेज ऑफ शाक्य मुनि' का प्रकाशन
1880	एच.एच. कौल को प्राचीन इमारतों का संग्रहाध्यक्ष बनाया गया।
1888	ट्रेजर–ट्रोव' एक्ट बनाया गया। इसके अनुसार सरकार पुरातात्विक महत्व की किसी चीज का इस्तेमाल कर सकती थी।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

काल रेखा–2

बीसवीं सदी	
1914	जॉन मार्शल और अल्फ्रेड फूसे की पुस्तक 'द मॉन्यूमेंट्स ऑफ सांची' का प्रकाशन
1923	जॉन मार्शल की पुस्तक 'कंजर्वेशन मैनुअल' का प्रकाशन
1955	प्रधानमंत्री जवाहर लाल नेहरू ने राष्ट्रीय संग्रहालय दिल्ली की नींव रखी।
1989	सांची को एक विश्व कलादाय स्थान घोषित किया गया।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

अभ्यास प्रश्न

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

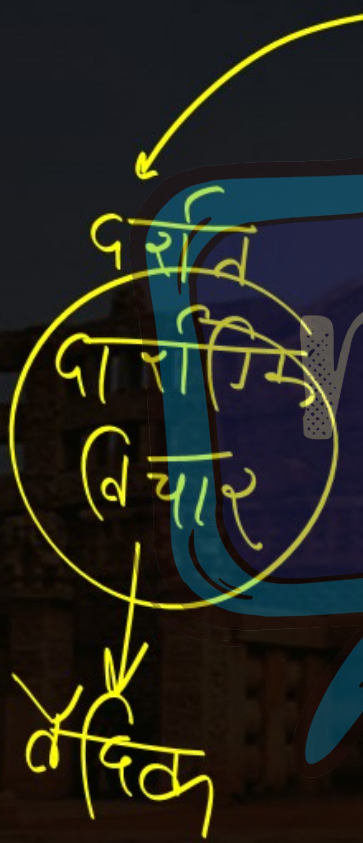

1. क्या उपनिषदों के दार्शनिकों के विचार नियतिवादियों और भौतिकवादियों से भिन्न थे? अपने जवाब के पक्ष में तर्क दीजिए।

उत्तर : उपनिषदों के अनुसार दार्शनिकों के विचार :-

उपनिषदों के समय लोग कई बातें जानने के बड़े उत्सुक थे। जैसे वे जानना चाहते थे कि –

(i) जीवन का अर्थ क्या है?

(ii) मृत्यु के बाद जीवन की संभावना है क्या?

(iii) क्या पुनर्जन्म अतीत के कर्मों के आधार पर होता है।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

उपनिषद्

- उपनिषदों में ब्रह्म, आत्मा, कर्म, पुनर्जन्म तथा मोक्ष संबंधी दार्शनिक विचारों की विवेचना है।
- उपनिषदों के अनुसार आत्मा बहुत सूक्ष्म होती है लेकिन वह सर्वव्यापक है।

नियतिवाद – ऐसी परंपरा के लोग जो यह विश्वास करते हैं कि सब कुछ पूर्व-निर्धारित है।

- यह आजीविका परंपरा के लोग कहलाते हैं।
- मनुष्य के सुख-दुख निर्धारित मात्रा में माप कर दिये गये हैं। इन्हें बदला नहीं जा सकता और न ही बढ़ाया या घटाया जा सकता है।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

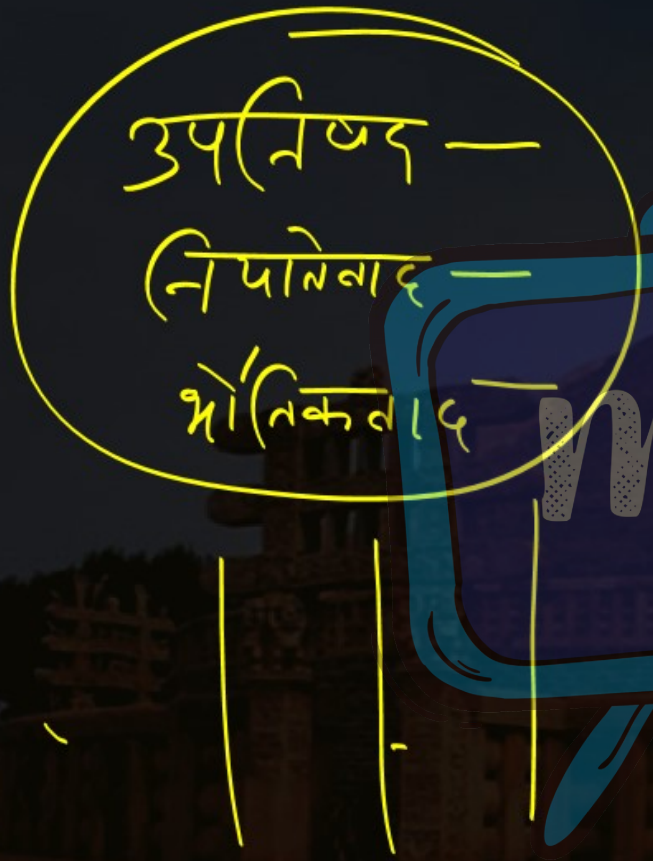

भौतिकवादी – ये भौतिक वस्तुओं से सुख प्राप्त करने वाली विचारधारा के लोग हैं जो देह या शरीर को ही आत्मा मानते हैं।

- ये लोकायत परंपरा के लोग कहलाते हैं।
- इनका मानना था कि संसार में दान देना, यज्ञ करना, या चढ़ावा देना जैसी कोई चीज नहीं होती हैं
- मनुष्य की मृत्यु के साथ ही चारों तत्व नष्ट हो जाते हैं जिनसे वह बना है तथा आत्मा अंतरिक्ष का हिस्सा बन जाती है।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

पंचमहाव्रत

2. जैन धर्म की महत्वपूर्ण शिक्षाओं को संक्षेप में लिखिए।

उत्तर : जैन धर्म के पांच महाव्रत हैं – ये जैन, साधु व साध्वियों के व्रत हैं –

1. अहिंसा – मन, वचन व कर्म से न किसी को दुखी करना, न ही किसी की हत्या करना।
2. सत्य – किसी भी परिस्थिति में असत्य नहीं बोलना चाहिए।
3. अस्तेय – किसी भी वस्तु या विचारों की चोरी न करना।
4. अपरिग्रह – संग्रह नहीं करना।
5. ब्रह्मचर्य – परमात्मा में विचरना।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

अहिंसा :- यह जैन धर्म की सबसे महत्वपूर्ण अवधारणा है। जिसके अनुसार सम्पूर्ण विश्व प्राणवान है। इनके अनुसार पत्थर, चट्टान और जल में भी जीवन है।

- जीवों खासकर इन्सानों, जानवरों, पेड़-पौधों तथा कीड़ों-मकोड़ों को मारना नहीं चाहिए।
- जैन धर्म के अहिंसा के सिद्धांत ने संपूर्ण भारतीय चिंतन जगत को प्रभावित किया।
- जैन मान्यता के अनुसार जन्म और पुनर्जन्म का चक्र कर्म के द्वारा निर्धारित होता है।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

कैवल्य

कर्म के चक्र से मुक्ति के लिए त्याग और तपस्या की जरूरत होती है जो संसार के त्याग से ही संभव है जिसके लिए विहारों में निवास करना अनिवार्य है।

जैन धर्म में मोक्ष प्राप्ति का आधार त्रिरत्न हैं –

1. सम्यक ज्ञान
2. सम्यक चरित्र
3. सम्यक दर्शन

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan
LET'S LEARN TOGETHER

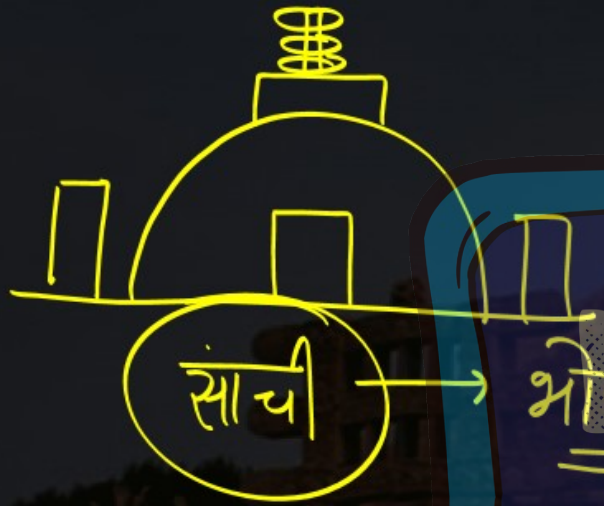

3. सांची के स्तूपों के संरक्षण में भोपाल की बेगमों की भूमिका की चर्चा कीजिए।

उत्तर : सांची के स्तूप के संरक्षण में भोपाल की बेगमों (i) शाहजहाँ बेगम तथा (ii) सुल्तानजहाँ बेगम की भूमिका महत्वपूर्ण रहीं।

भोपाल की बेगमों ने इस स्तूप के रख-रखाव व मरम्मत के लिए समय-समय पर धन का अनुदान दिया।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

- सुल्तानजहाँ बेगम ने वहां एक संग्रहालय तथा अतिथिशाला बनाने का अनुदान दिया।
- सांची के स्तूपों पर जॉन मार्शल ने अनेक पुस्तकें लिखीं जिनके प्रकाशन में भी सुल्तानजहाँ बेगम में अनुदान दिया।
- जॉन-मार्शल ने इन महत्वपूर्ण ग्रंथों को सुल्तानजहाँ को समर्पित कर दिया।
- प्रारम्भ में फ्रांसिसियों तथा बाद में अंग्रेजों ने सांची के पूर्वी तोरणद्वार को अपने देश ले जाकर संग्रहालय में प्रदर्शित करने की इजाजत मांगी।

Under CSR Support by
ipca | Foundation

missiongyan®
LET'S LEARN TOGETHER

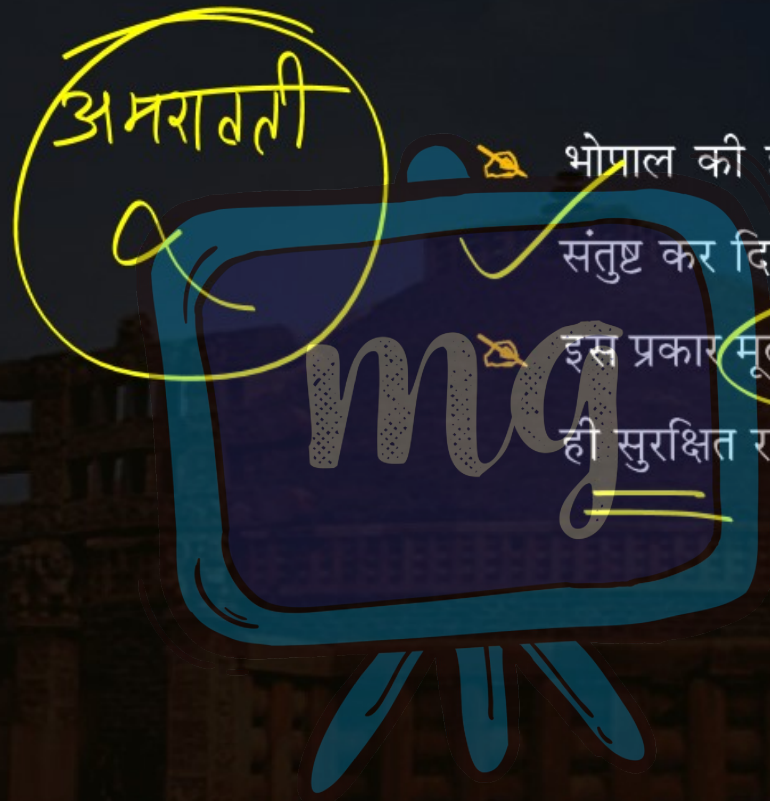

- भोपाल की इन बेगमों ने प्लास्टर की प्रतिकृति से संतुष्ट कर दिया।
- इस प्रकार मूल कृति भोपाल राज्य में अपनी जगह पर ही सुरक्षित रही।